

हृदय - प्राण

नाम - आरती

पिता - श्री कर्म बीर

माता - श्रीमती सरोज शर्मा

शिक्षा - एम० ए०, (NET)

----- हृदय - प्राण -----

--

विरान हुए आकाश का सूनापन

तुम -

क्यों धारण किए हो ?

संसार की नीरवता को

तुम -

क्यों खुद में कैद किए हो ?

क्यों मेरे हृदय के प्राण ?

- क्यों ?

--

क्यों तुम वृक्षों के

पत्तों की तरह

हवाओं के सहारे बह गए ?

क्यों तुम फूलों की

ताजगी, महक को छोड़

चुपचाप मुरझा गए ?

क्यों तुम अन्तस में

श्वासों की भाँति

महज एक ही बार में घुल गए ?

क्यों मेरे हृदय के प्राण ?

- क्यों ?

--

मैं तुमसे कई - कई बार

मिलना चाहती थी

कई - कई बार

मिटना चाहती थी

तुम्हारे मौन को

कभी नहीं पूजा था

--

तुम्हारे मौन ने
मेरे भीतर के ज्वार को
शांत कर मुझे
निर्जीव-सा बना डाला
रक्त के प्रवाह की
तेजी को तुमने
धीमा-और धीमा कर दिया
--
विरान हुए आकाश का सूनापन
तुम -
क्यों धारण किए हो ?
संसार की नीरवता को
तुम -
क्यों खुद में कैद किए हो ?
क्यों मेरे हृदय के प्राण ?
- क्यों ?
--
मैंने चाहा था
कि,
पवन का मदमस्त झोंका बन जाऊँ
और तुम्हारे रूखे - सुखे चेहरे की
रोशनी और चमक बन जाऊँ
तुम्हारे हृदय को क्षण-भर के लिए
उत्साह दे जाऊँ
--
फिर तुम जीवन को कभी
नीरवता में
बांध नहीं सकोगे
जीवन - मूल्य
उसकी साधना को
उसकी सम्पन्नता को
कम नहीं कर सकोगे
फिर तुम कभी
नीरव , उदासीन , जड़ ,
और प्रभावहीन
नहीं बन सकोगे
- मेरे हृदय के प्राण